प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय
तीन

प्रेरितों के काम की पुस्तक के प्रमुख विषय

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें **3**
तैयारी **4**
नोट्स **5**
I. **परिचय** (0:25) 5
II. **पवित्र आत्मा** (2:10) 5
क. पिन्तेकुस्त से पहले (3:37) 5
1. समय (4:47) 6
2. उद्देश्य (10:13) 8
ख. पिन्तेकुस्त का दिन (13:40) 9
1. विशेषता (14:33) 9
2. अन्य भाषाएँ (18:50) 10
3. परिणाम (26:26) 13
ग. पिन्तेकुस्त के बाद (31:00) 14
1. सामरिया (31:17) 14
2. कैसरिया (35:08) 15
3. इफिसुस (37:12) 15
III. **प्रेरित** (40:51) 16
क. अद्वितीय (40:51) 17
1. शर्तें (43:06) 17
2. नींव का समय (46:49) 17
ख. अधिकारिक (49:21) 18
1. कार्य (49:32) 18
2. आशीष (53:48) 19
3. आश्चर्यकर्म (55:21) 19
4. प्रकाशन (57:55) 20
ग. विविधतायें (59:39) 21
1. रणनीतियाँ (59:55) 21
2. ढाँचे (1:06:34) 21
IV. **कलीसिया** (1:10:05) 22
क. आवश्यकता (1:10:19) 22
1. भौतिक सीमायें (1:10:58) 23
2. लौकिक सीमायें (1:13:20) 23
ख. तैयारी (1:15:05) 24
1. शिक्षायें (1:15:17) 24
2. अधिकारीगण (1:18:44) 24
3. कठिनाइयाँ (1:25:14) 25
V. **सारांश** (1:29:25) 26
पुनर्विचार हेतु प्रश्न **27**
लागू करने हेतु प्रश्न **31**

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

तैयारी

- प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ें

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

नोट्स

I. परिचय (0:25)

लूका ने तीन प्रमुख अवधारणाओं को सम्बोधित किया है जब उसने बिना किसी बाधा के परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के फैलाव के दृश्य को खोला।

II. पवित्र आत्मा (2:10)

- कलीसिया को परिवर्तित जीवन यापन करने और संसार में सुसमाचार प्रचार करने के लिए सशक्त करता है।

- प्रेरितों और आरम्भ की कलीसिया के अन्य अगुवों की सेवकाई को मान्यता देने के लिए कई चिन्ह और आश्चर्यकर्म का प्रदर्शन किया।

- उसने उन मसीहियों को उत्साह से भर दिया जो कि विरोध और सताव का सामना कर रहे थे।

क. पिन्तेकुस्त से पहले (3:37)

यीशु ने उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के मध्य चालीस दिनों का समय प्रेरितों को शिक्षा देने में व्यतीत किया।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

1. समय (4:47)

जब यीशु ने आत्मा के आने वाले बपतिस्मे की घोषणा की, तो प्रेरितों ने यह पूछा कि क्या यीशु इस्राएल के राज्य को पुन: स्थापित करने वाला था।

पुराने नियम के भविष्द्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की थी:

- क्योंकि इस्राएल और यहूदा के पाप इतने ज्यादा थे, जिसके परिणामस्वरूप:
    - परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा की हुई भूमि से निर्वासित कर देगा
    - उन्हें विदेशी शासकों के अत्याचार के अधीन कर देगा।

- परमेश्वर मसीह को उसके लोगों को पुन: स्थापित करने के लिए भेजने के द्वारा:
    - उनके पापों को क्षमा करेगा
    - उन्हें वापस उनकी भूमि पर ले आएगा
    - उनके ऊपर राज्य करेगा

- मसीह इस्राएल और यहूदा के ऊपर राजा बन कर आएगा और इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को प्रतिज्ञा की हुई भूमि में केन्द्रित करते हुए परिवर्तित कर देगा।

- परमेश्वर के लोग अनन्त काल और आशीषित जीवन का आनन्द मनाएंगे।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

प्रेरितों ने यह आशा की कि वह पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को स्वर्ग में आरोहण होने से पहले पूरा करेगा।

परमेश्वर पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को निम्न तरीके से पूरा करेगा:

- पूरे संसार में सुसमाचार के फैलाव के द्वारा
- मसीह के महिमा में भरे हुए पुन: आगमन के द्वारा

जब न्याय पूरा हो जाएगा, तो परमेश्वर अपने आत्मा को इस रीति से उण्डेलेगा जैसा कि पहले कभी नहीं उण्डेला गया है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह घोषणा की थी:

- मसीह के आगमन से पहले इस्राएल पाप, भ्रष्टाचार और मौत के युग में जीवन यापन करेगा।
- जब मसीह आएगा तो वह एक नए युग का सूत्रपात करेगा।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

यीशु ने यह समझाया कि परमेश्वर का महिमा से भरा हुआ राज्य विभिन्न अवस्थाओं में आएगा।

- उदघाटन - यीशु की पार्थिव सेवकाई के मध्य

- निरन्तरता - मसीह के स्वर्ग में राज्य के दौरान चलता रहेगा

- पूर्णता - जब यीशु भविष्य में पुनः वापस आएगा

2. उद्देश्य (10:13)

आत्मा का उण्डेला जाना प्रेरितों को मसीह के लिए धर्मी और विश्वासयोग्य गवाही देने के लिए सशक्त करना था।

- सामर्थ्य - आत्मा की सामर्थ्य का होना पुराने नियम में एक सामान्य बात है (उदाहरण के लिए, "परमेश्वर की आत्मा")।

- गवाही - परमेश्वर के आत्मा ने उसके लोगों को साहसपूर्वक और प्रभावी ढँग से परमेश्वर के बदले में बोलने की सामर्थ्य दी।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

आत्मा उनमें ऐसे कार्य करेगा जैसा कि पुराने नियम में अन्यों लोगों के द्वारा कार्य किया था।

ख. पिन्तेकुस्त का दिन (13:40)

1. विशेषता (14:33)

- फसह् के साथ निकटता से जुड़ा उत्सव का समय था।

- फसह् के 50 दिनों के बाद, आरम्भ की फसल कटाई समय मनाया जाता था।

- मूसा को परमेश्वर के द्वारा दी गई व्यवस्था क ा स्मरण कर ात ा थ ा।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का उण्डेला जाना मसीही कलीसिया के लिए विशेष महत्व रखता है:

- यिर्मयाह द्वारा घोषित की गई आशा का भी स्मरण दिलाता था।

- यीशु का क्रूस पर बलिदान फसह के त्यौहार के बीच में हुआ।

- आत्मा का आगमन अनन्त मोक्ष की फसल का पहला फल था।

- यह संकेत देता है कि कलीसिया ने परमेश्वर की व्यवस्था को उनके हृदयों पर लिखे जाने को प्राप्त कर लिया था।

2. अन्य भाषाएँ (18:50)

कलीसिया में अन्यभाषा के वरदान को लेकर बहुत ज्यादा भ्रम की स्थिति है।

कुछ यह बहस करते हैं कि अन्यभाषा सुनने की बजाए बोलने का आश्चर्यकर्म था।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

अधिक संभावना यह है कि, आश्चर्यकर्म जो हुआ वह बोलने का हुआ, ऐसा जिसमें आरम्भ के विश्वासियों ने वास्तविक मानव भाषा में बातें की थीं

- लूका ने विशेष तौर पर लिखा है कि पवित्र आत्मा ने अन्य भाषा में बातें करने के लिए वक्ताओं को सक्षम किया।

- *अन्यभाषा* का यूनानी शब्द अक्सर सामान्य मानवीय भाषाओं की ओर संकेत करता है।

पतरस की अन्यभाषा की व्याख्या:

- प्रेरितों के काम 2:16-21 की ओर संकेत देती है।

- उसने यह विश्वास किया है कि पिन्तेकुस्त के दिन की घटनायें अन्तिम दिनों का हिस्सा थीं।

- उसने संकेत दिया कि आत्मा का आगमन प्रभु के महान और महिमा से भरे हुए दिन पहले प्रकट होगा।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

बहुत सारे विश्वासी आज आत्मा के इस उण्डेले जाने के भव्य महत्व को खो देते हैं।

यह अपेक्षा लोकप्रिय है कि सभी सच्चे आत्मिक विश्वासी वैसे ही आत्मा के अनुभव को नाटकीय प्रगटीकरण के साथ प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर के राज्य के उदघाटन के समय परमेश्वर के कई बड़े और महान् अद्भुत कार्य प्रकट हुए:

- मसीह हमारे पापों के लिए मर गया।
- मसीह मृतकों में जी उठा ।
- मसीह स्वर्गारोहित हो कर पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हुआ।
- प्रत्येक बार जब भी एक व्यक्ति मसीह के पास विश्वास में आता है, तो इस घटना के गुण उस व्यक्ति के जीवन में लागू किए जाते हैं।

पिन्तेकुस्त सभी समयों के-लिए-एक-बार की महान् घटना थी जिसे परमेश्वर अन्त के दिनों में लेकर आया है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

3. परिणाम (26:26)

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को राज्य के सुसमाचार के विस्तार के लिए साहसपूर्वक गवाही देने के लिए सशक्त किया।

पिन्तेकुस्त से पहले पतरस:

- को रूपान्तरण के पहाड़ पर झिड़का गया था।
- ने मसीह का तीन बार इन्कार किया।
- के पास उच्च शिक्षा नहीं थी।
- वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे यह अपेक्षा की जाती हो कि वह किसी को निरूत्तर करने वाले तरीकों में बात करेगा।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस:

- पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार एक सफल सन्देश देता है
- उनका खण्डन करता है जिन्होंने दोष लगाया कि विश्वासी नशे में थे।
- पुराने नियम के संदर्भ से टिप्पणी देता, व्याख्या करता और उन्हें निरूत्तर करने वाले तरीके से लागू करता है।
- सुसमाचार की गवाही देने लिए आश्चर्यकर्मों को प्रकट करने के लिए सामर्थ्य को प्राप्त करता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

परमेश्वर ने प्रेरितों को गवाही देने के लिए आशीषित किया।

- पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोग प्रभु में मिल गए।

- आन्तरिक वृद्धि भी आत्मा के सशक्त किए जाने के परिणामस्परूप आई।

ग. पिन्तेकुस्त के बाद (31:00)

1. सामरिया (31:17)

विश्वासियों ने आत्मा को उनके मन परिवर्तन के बाद प्राप्त किया।

इसने बड़ी सँख्या में सामरियों का मसीही विश्वास में आने के बारे में सूचित किया।

जब सामरिया में सुसमाचार पहुँचा, तो इसने एक नए चरण को, यीशु के द्वारा उसके शिष्यों को दिए हुए आदेश की पूर्णता की ओर प्रतिनिधित्व दिया।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

2. कैसरिया (35:08)

अन्यजाति पहली बार मसीह में एक बड़ी सँख्या में आ मिले थे।

पिन्तेकुस्त के दिन के सामान्तर: जिन्होंने सुसमाचार में विश्वास किया था वे अन्य भाषा बोलने लगे।

यह आरम्भ की कलीसिया के लिए अचम्भे की बात ठहरी जब अन्यजातियों ने मसीह में यहूदी धर्म में पूरी तरह मन परिवर्तित किए बिना मन परिवर्तन किया।

3. इफिसुस (37:12)

पिन्तेकुस्त के दिन के सामान्तर: मसीह में आने वाले अन्य भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

आत्मा को प्राप्त करने वाले लोग पश्चाताप किए हुए यहूदी थे जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही को यूहन्ना के प्रकाशन से पहले प्राप्त किया था कि यीशु ही मसीह था।

- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के बीच का सम्बन्ध के विषय को बन्द करता है।

- संकेत देती है कि अब यीशु का आत्मा को लाने का कार्य एक नई अवस्था में पहुँच चुका है।

III. प्रेरित (40:51)

मसीह के स्वर्गारोहण होने से पहले, उसने उसकी सेवकाई को निरन्तर चलते रहने के लिए प्रेरितों को नियुक्त किया, जो कि उसके राज्य को यरूशलेम से सुसमाचार के द्वारा पृथ्वी के अन्तिम छोर तक पहुँचा दें।

पवित्र आत्मा प्रेरितों को इस लिए दिया गया ताकि वे पूरे संसार में उसके गवाह बन जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

क. अद्वितीय (40:51)

1. शर्तें (43:06)

उनके पद की शर्तें किसी को भी प्रेरित बुलाने से रोकती थी।

शर्तेंं अद्वितीय थीं:

- उसने परोक्ष में यीशु से शिक्षा प्राप्त किया हुआ हो।
- उसने यीशु को उसके जी उठने के बाद देखा हुआ हो।
- स्वयं परमेश्वर के द्वारा इस पद पर नियुक्त किया गया हो।

पौलुस को यीशु के स्वर्गारोहण होने के बाद में एक प्रेरित के रूप में चुना गया था

2. नींव का समय (46:49)

प्रेरित को यीशु मसीह की कलीसिया की स्थापना के कार्य के लिए नियुक्त किया गया था।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

प्रेरितों ने कलीसिया की सेवा नींव के रूप से की:

- सुसमाचार को यरूशलेम से लेकर यहूदिया और फिर सामरिया, फिर पृथ्वी के अन्तिम छोर तक लेकर गए।
- यहूदियों में से, सामरियों से, और अन्यजातियों की मूर्तिपूजा से पहले मसीही विश्वासियों को प्राप्त किया गया।
- पहली कलीसियाओं, और उनमें उस नमूने की स्थापना की जिसका अनुसरण आने वाली कलीसिया करेगी।
- विशेष कार्य को फिर से पूरा किए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

ख. अधिकारिक (49:21)

1. कार्य (49:32)

शब्द *अप्पोसटोलोस* यूनानी भाषा में "भेजे जाने का" अर्थ रखता है।

- सन्देशवाहक
- मध्यस्थ
- राजदूत

यीशु ने मिशनरियों को मसीह के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया।

यीशु ने अपने हिस्से के अधिकार में से अपने मिशनरियों को देता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

प्रेरित आधिकारिक राजदूत थे जो अन्य शिष्यों से दो महत्वपूर्ण तरीके से भिन्न थे:

- उन्हें कलीसिया में इस पद के ऊपर सदैव के लिए नियुक्त किया गए था।

- उन्हें मसीह की कलीसिया की स्थापना और प्रशासन से सम्बन्धित सभी विषयों में बात करने के लिए अधिकृत किया गया था।

2. आशीष (53:48)

परमेश्वर ने प्रेरितों को प्रत्येक बार जब भी उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया तब लोगों को प्रभु में मिलाने के द्वारा आशीषित किया।

कलीसिया में यह बाह्य, गुणात्मक वृद्धि परमेश्वर की स्वीकृति और सामर्थ्य का प्रमाण थी।

3. आश्चर्यकर्म (55:21)

आश्चर्यकर्मों का एक मुख्य कार्य यह प्रमाणित करना है कि परमेश्वर के सन्देशवाहक सत्य को बोलें और परमेश्वर प्रदत अधिकार का प्रयोग करें।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

प्रेरितों के द्वारा आश्चर्यकर्म यह प्रमाणित करते हैं कि उनकी मसीह के प्रति दी गई गवाही सत्य थी।

4. प्रकाशन (57:55)

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों का मार्गदर्शन निम्न कार्यों के लिए दिया:

- सुसमाचार के सत्य की ओर अगुवाई करने के लिए।
- पूरी कलीसिया के लिए निर्णय लेने के लिए।
- ऐसे संरचनात्मक तत्वों को आकार दे सकें जो कलीसिया को परिपक्वता की ओर अग्रसर करे।

प्रेरितों का अधिकारिक कार्य, सेवकाई में आशीष, सत्यापित आश्चर्यकर्म और प्रकाशन सभी उनके निर्विवाद अधिकार को निरूत्तर कर देने वाले साक्ष्य थे।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

ग. विविधतायें (59:39)

1. रणनीतियाँ (59:55)

- इतिहास

- पवित्र शास्त्र

- प्रकृति

- व्यक्तिगत् अनुभव

- चिन्ह और आश्चर्यकर्म

- मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता

2. ढाँचे (1:06:34)

- **सार्वजनिक भाषण** - सन्देश, भाषण का मंडन, या फिर किसी अन्य तरह का व्यक्तव्य हो।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

- **संवाद** - लोगों को प्रतिवाद करने के लिए निमन्त्रण दिया जाता है, प्रेरित सुसमाचार का मंडन करते थे।

- **पूरा घराना** - अक्सर कई सम्बन्धी, मित्र और उस घराने के सेवकगण सम्मिलित होते थे।

- **व्यक्तिगत् सुसमाचार प्रचार –** बातचीत करते हुए अपने शब्दों को विशेष तौर पर श्रोताओं के ज्ञान और अनुभव से मिलाया।

प्रेरितों के नमूने हमें शिक्षा देते हैं कि:

- सुसमाचार के उन तत्वों के ऊपर जोर देने के लिए शिक्षा देता है जो बड़ी दृढ़ता के साथ हमारे श्रोताओं के साथ तर्क वितर्क कर सकती है।

- प्रत्येक अविश्वासी के जीवन के साथ सुसमाचार को सम्बन्धित करने के लिए विशिष्ट तरीके का पता लगा सकते हैं।

IV. कलीसिया (1:10:05)

क. आवश्यकता (1:10:19)

थोड़े से ही लोग हैं जो कि मसीह के सुसमाचार को पूरे संसार में स्वयं के बल पर नहीं ले जा सकते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

1. भौतिक सीमायें (1:10:58)

- प्रेरित पूरे संसार के लिए "जीवित पत्रियाँ" बन कर नहीं रह सकते थे।

- प्रेरितों ने कलीसिया को प्रामाणिक गवाह होने के बहुत अधिकारों को दे सौंप दिया है।

- प्रेरितों ने प्रत्येक पीढ़ी में प्रामाणिक सुसमाचार प्रचार के लिए एक स्वयं-को-प्रदर्शित करता हुआ नमूना प्रदान किया।

2. लौकिक सीमायें (1:13:20)

- कम से कम कुछ प्रेरित उस समय तक जीवित नहीं रहेंगे जब तक यीशु पुन: वापस नहीं आ जाता।

- प्रेरितों ने कलीसिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रेरिताई देखरेख में सुसमाचार प्रचार के लिए और अपनी मृत्यु के बाद कलीसिया के निर्माण के कार्य के चलते रहने के लिए इसे प्रशिक्षित किया।

प्रेरितों की सीमाओं के कारण कलीसिया परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए रणनीतियों का केन्द्र थी।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

ख. तैयारी (1:15:05)

1. शिक्षायें (1:15:17)

प्रेरितों की शिक्षायें कलीसिया के लिए नींव थी, कलीसिया के विश्वास का आधार थी।

कलीसिया को न केवल यीशु जो कि सिरे का पत्थर है के ऊपर निर्मित होना चाहिए, परन्तु आरम्भ की कलीसिया के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव के ऊपर भी निर्भर होना चाहिए।

2. अधिकारीगण (1:18:44)

विभिन्न मसीही परम्पराओं ने यह समझा है कि आरम्भ की कलीसिया में विभिन्न तरह का शासन और अधिकारीगण थे।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

प्रेरितों ने कलीसिया में अतिरिक्त अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया जो कि परमेश्वर के मिशन को आगे की ओर ले कर जाएंगे।

- डीकन

- प्राचीन

प्रेरितों ने कलीसिया के लिए प्राचीनों को अपने साथ अगुवाई करने के लिए उत्साहित किया यद्यपि अभी वे जीवित ही थे।

प्रेरितों ने कलीसिया के इन अधिकारीगणों के पदों को परमेश्वर के प्रतिज्ञात् मसीह के राज्य के मिशन को आगे ले जाने के रूप में पुकारा।

3. कठिनाइयाँ (1:25:14)

प्रेरितों का काम कठिनाई, खतरे और उत्पीड़न से भरा हुआ था

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

जिस तरह से प्रेरितों ने कलीसिया को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार किया इसे पौलुस के द्वारा इफिसियों के प्राचीनों को दिए हुए उसके भाषण में देखा जा सकता है।

प्रेरितों की चाहत यही थी कि:

- वे कलीसिया को निरूत्साहित न करें
- इसकी अपेक्षा कलीसियाओं को मसीह में भरोसा करने के लिए तैयार करें कि वे कठिनाइयों का सामना करें

V. सारांश (1:29:25)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. पवित्र आत्मा के आगमन के समय और उद्देश्य के संदर्भ में पिन्तेकुस्त से पहले पवित्र आत्मा के बारे में यीशु की शिक्षाओं को सारांशित करें?

2. पवित्र आत्मा की पिन्तेकुस्त के दिन की सेवकाई को इसकी विशेषता, अन्यभाषा के वरदान, और इन घटनाओं के निकले परिणाम के संदर्भ में व्याख्या करें?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

3. पिन्तेकुस्त के पश्चात् पवित्र आत्मा के कार्य को सारांशित करें जबकि वह निरन्तर प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए सामर्थ्य देने के कार्य को करता रहता है। भौगोलिक और जातीयता को विचार विमर्श में सम्मिलित करें।

4. क्यों और कैसे प्रेरित विशेष थे?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

5. अपने कार्यों, उनकी सेवकाइयों के ऊपर उसकी आशिष, उनके द्वारा प्रगट किए गए आश्चार्यकर्म और जिस प्रकाशन को उन्होंने पाया और उपलब्ध किया के संदर्भ में प्रेरितों के अधिकार के ऊपर विचार विमर्श करें।

6. प्रेरितों और उनके अनुयायियों की विभिन्न रणनीतियों और परस्थितियों के ऊपर विचार विमर्श करें जबकि वे पूरे संसार में मसीह की गवाही देते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

7. क्यों कलीसिया आवश्यक है?

8. व्याख्या करें कि कैसे प्रेरितों ने परमेश्वर के राज्य के विस्तार के मिशन की निरन्तर शिक्षा देने, उनके पद और कठिनाइयों के संदर्भ में करते रहने के लिये तैयार किया।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. कैसे पवित्र आत्मा लोगों को परिवर्तित जीवन जीने और संसार को सुसमाचार प्रचार करने के लिए सामर्थ्य देता है? वे कौन से तरीके हैं जिनमें आपने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का अनुभव किया है?

2. अन्यभाषा का वरदान क्या है? क्यों परमेश्वर ने इस वरदान को दिया?

3. सुसमाचार के सन्देश की प्रभावशाली गवाही और भक्तिमयी जीवन यापन करने के लिए हमें क्यों आत्मा की सामर्थ्य के ऊपर निर्भर होना चाहिए?

4. वे कौन से तरीके हैं जिनमें प्रेरित अभी भी कलीसिया के लिए नींव के रूप में सेवा देते हैं? क्यों अभी और अन्य आधिकारिक प्रेरित नहीं हो सकते हैं? यह क्यों महत्वपूर्ण है?

5. क्यों आज की कलीसिया प्रेरितों के द्वारा निर्धारित किए हुए आधिकारिक न्यायों के साथ बन्धी हुई है? प्रेरितों द्वारा किए हुए कुछ न्याय के कार्यों के उदाहरण दें, और व्याख्या करें कि वे क्यों आधुनिक कलीसिया और व्यक्तिगत् मसीहियों को वचनबद्ध करते हैं?

6. कौन सी रणनीतियों को आप व्यक्तिगत् रूप से उपयोग करते हैं जब आप सुसमाचार की गवाही देते हैं? किस तरह से आप सुसमाचार की अपनी गवाही को और अधिक उन्नत कर सकते हैं?

7. किस तरह से आपकी कलीसिया परमेश्वर के राज्य के विस्तार के मिशन को आगे बढ़ा रही है? इस प्रयास को आपकी कलीसिया और अधिक कैसे उन्नत कर सकती है? वे कौन से तरीके हैं जिनमें आप व्यक्तिगत् रूप से कलीसिया की सहायता परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए कर सकते हैं?

8. इस अध्ययन से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा